

taken up after this discussion, then you can make your point if you like.

Now Shri Harish Rawat.

16.08 hrs.

[SHRI R.S. SPARROW *in the chair*]

16.08 hrs.

DISCUSSION ON THE SITUATION  
 ARISING OUT OF REPORTED TRAINING  
 CAMPS FOR TRAINING  
 OF EXTREMISTS OF PUNJAB  
 IN NEIGHBOURING AREAS  
 OF THE STATE-*CONTD*

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा) : सभापति जी, आज जो जम्मू-काश्मीर से हुक्मरान है, वह इस देश की एक महान परम्परा की कड़ी हैं। मैं समझता हूँ, जो प्रश्न यहां पर डिसकस किया जा रहा है, उसके संदर्भ में उनको भावुकता से या राजनीतिक स्वार्थ के आधार पर नहीं सोचना चाहिए। मुझसे लेकर डॉ॰ स्वामी तक किसी भी व्यक्ति की यह दिली ख्वाहिश होगी कि इन कैम्पस के विषय में जो कुछ खबरों या मँग-जीन में साया आ रहा है, वह सत्य न हो। कोई भी राष्ट्र-भक्त इस बात को सहन नहीं कर पायेगा कि उग्रवादियों के कैम्प आयोजित किए जाएं और उन कैम्पों में लोगों को जाति विद्वेश और धार्मिक विद्वेश तथा ऐसी उग्रवादी कार्य-वाहियों की ट्रेनिंग दी जाए जिससे राष्ट्र की एकता खतरे में पड़ सकती है। कोई भी इस बात को सहन नहीं करेगा कि इन कैम्पों में भारत के झण्डे या परम्परा की अवहेलना करने की छूट दी जाये। वह चाहे वरक ग्राम उधमपुर, पंछ, पुलवाना, बारामुला या दिगाना आश्रम की कैंप हो या वह कैम्प हो जिसको एक दो दिन पहले जम्मू-काश्मीर के मुख्यमंत्री जी ने सम्बोधित किया है। हम चाहते हैं कि इन समाचारों को यकीन न करें। हकीकत कुछ और ही बताती है। नए मुख्य मन्त्री के द्वारा इन कैम्पों को अटेन्ड किया जा रहा है और उनकी प्रेजेन्स में लोगों के द्वारा खालिस्तान आदि के नारे भी

बुलन्द किए जा रहे हैं। ए० आइ० एस० एस० एफ० एक उग्रवादी संगठन है जिसकी गति-विधियां भी अवांछनीय हैं। उस संगठन के निमंत्रण पर एक मुख्य मन्त्री अमृतसर भी जाने वाले थे लेकिन किसी कारणवश या बीमार पड़ जाने के कारण वे जा नहीं पाए। यह भी एक हकीकत है।

चाहे एक दिवसीय क्रिकेट मैच हो चाहे मीर वायज फारूख के साथ श्रीनगर में चुनाव के समय किया गया समझौता हो या उसके बाद मीर वायज फारूख के साथ दोहराई गई यह बात हो कि हम जिहाद के लिए तैयार रहें, ये सारी घटनाएं ऐसी हैं जो अपने आप में जुड़ी हुई हैं।

आज मुख्य मन्त्री बार-बार एक बात दोहराते हैं। यह कहा जाता है कि राज्य के साथ सौतेलेपन का व्यवहार किया जा रहा है। जम्मू काश्मीर के मुख्य मन्त्री इस तरह की बात दोहराते हैं तो उससे सारे देश को नुक्सान होता है। वहां जो उग्रवादी संगठन हैं जो विदेशी शक्तियों के इशारे पर काम करते हैं, जमायते तुलबा हैं, इस्लामी मुहाजे आजादी है, उनको बढ़ावा मिलता है। आप तो जानते ही हैं कि श्रीनगर में एक दिवसीय क्रिकेट मैच में मुख्य मन्त्री की उपस्थिति में हिन्दुस्तान को नीचा दिखाने की कोशिश की गई, हिन्दुस्तान के खिलाफ नारे लगाए गए।

आज जम्मू काश्मीर में अपने राजनीति विरोधियों का दमन करने के लिए पुलिस एक्ट 1925 का सहारा लिया जा रहा है। एक नौजवान का एक बयान शायद हुआ है जिसमें उन्होंने कुछ ऐसी बातें कहीं जिनको मुख्य मन्त्री को कंट्रैडिक्ट करना चाहिये था, उनका प्रतिवाद करना चाहिये था लेकिन नहीं किया। यह गम्भीर आरोप है। उससे किसी भी व्यक्ति का दिल शंका से भरे बिना नहीं रह सकता है।

जो कुछ भी आज इन ट्रेनिंग कैम्पों में हो रहा है, या पंजाब में जो घटनाएं हो रही हैं उस

संदर्भ में हम पड़ोसी मुल्कों को भी नहीं भूल सकते हैं। जनरल जिया के द्वारा जिस प्रकार गंगा सिंह दिल्ली को आमंत्रित किया गया, जिस प्रकार का बयान उनका एक मँगजीन में छपा है, उसको देखकर अफसोस ही होता है। साथ-साथ पाकिस्तान के विदेश मन्त्री कहते हैं :

Kashmir is not a forgotten issue.

गिलगित में डिनर देकर भारत को प्रोबोक करने की कोशिश हो रही है, हथियारों का जखीरा जमा किया जा रहा है।

ये सब घटनाएं चिन्ता का विषय हैं। जम्मू काश्मीर में या पंजाब में जो घटनाएं घटित हो रही हैं, उन पर हमें पैनी नजर रखनी चाहिये, उनका बारीकी से अध्ययन करना चाहिये। एक और गम्भीर खबर अखबारों में छपी है। यह कहा गया है कि इन कैम्पों को एक अरब शेख द्वारा फाइनेंस किया जा रहा है। राज्य सभा में कहा गया कि सी आई ए के द्वारा जनरल जिया के नेतृत्व में पाकिस्तान में उग्रवादियों को ट्रेनिंग दी जा रही है। पाकिस्तान के मामले में डा० स्वामी विशेषज्ञ हैं और वही इस विषय में कुछ प्रकाश डालेंगे। लेकिन पंजाब में जो घटनाएं घटित हो रही हैं चाहे भिडरांवाले की धमकी हो अकाली दल द्वारा उनको राजनीतिक संरक्षण देने की बात हो या युनाइटेड फ्रंट के द्वारा दिया जा रहा समर्थन हो, इस सब पर से हम आंख और कान बन्द करके बैठे नहीं रह सकते हैं। सदन को भी इन सब कड़ियों पर गहराई से विचार करना चाहिये और राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर विचार करना चाहिये। निश्चय ही पंजाब की ये सारी घटनाएं ट्रेनिंग कैम्पों के साथ जुड़ी हुई हैं।

अकाल तख्त द्वारा बार-बार लोगों द्वारा निवेदन करने के बावजूद भी इन्कार किया जा रहा है कि हिंसा के खिलाफ वह हुकमनामा जारी करे। मैं समझता हूँ कि विरोधी दल के लोगों को और पार्लियामेंट को एक मत से अकाली दल को कहना चाहिये कि हुकमनामा जारी करवा कर इस प्रकार की हिंसक वारदातों को

रोकने की उसको कोशिश करनी चाहिये। साथ ही स्पष्ट शब्दों में कहना चाहिये कि जब तक अकाली मोर्चा कायम रहेगा तब तक पंजाब में किसी प्रकार की शान्ति नहीं हो सकती है और मोर्चे को समाप्त करके प्रधान मन्त्री और गृह मन्त्री ने जो वार्ता का उनको निमंत्रण दिया है उसको उनको स्वीकार कर लेना चाहिये और वार्ता के लिए आ जाना चाहिये।

माननीय प्रधान मन्त्री ने एक बहुत अच्छा सुझाव दिया है कि सीमा-विवाद के समाधान का काम एक ट्रिब्यूनल को सौंप दिया जाए। किसी को भी इससे मतभेद नहीं हो सकता। लेकिन अकाली दल इसको मानने से इन्कार करता है। लोंगोवाल के नेतृत्व में अकाली दल इस समस्या को राष्ट्रीय स्तर पर हल करने के बजाए इसका अन्तर्राष्ट्रीयकरण करना चाहता है। लोंगोवाल ने एक बयान में कहा है कि कामनवेल्थ कन्ट्रीज के हैडज को इस मामले पर विचार करना चाहिए। जो राजनैतिक दल भारत के संविधान के प्रति निष्ठा रखता है और भारत के संविधान के अन्तर्गत एक राजनैतिक दल के रूप में कायम है, उसको इस तरह की बातें नहीं कहनी चाहिए और हर भारतवासी को उस पर एतराज होना स्वाभाविक है।

अकाली दल और ए आई एस एस एफ के लोगों ने अमृतसर में बसें जलाईं। उनकी सबसे बड़ी मांग थी कि निरंकारी चीफ के हत्यारे, रंजीत सिंह, को रिहा किया जाए। यदि कोई राजनैतिक दल किसी हत्यारे को रिहा करने की मांग करे, कानून का मुजरिम है, तो कोई भी सरकार उसको नहीं मान सकती। विरोधी पक्ष को और युनाइटेड फ्रंट के लीडर साहबान को— उसमें अलग-अलग लोगों के अलग-अलग व्यूज हैं, इसलिए वास्तव में वह डिसयुनाइटेड फ्रंट है— इस समस्या पर इस व्यूपायंट से विचार करना चाहिए।

मैं किसी पर आक्षेप नहीं करना चाहता हूँ, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि हम इन व्यक्तियों और दलों के नाम लेना चाहें या न चाहें, मगर

ये सब घटनाएं एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, जम्मू-काश्मीर या पंजाब या राष्ट्रीय स्तर पर जिन दलों के नाम मैंने लिए हैं, वे सब इन घटनाओं के साथ जुड़े हुए हैं। ऐसा लगता है कि ट्रेनिंग कैंप हो या अकाली मोर्चा, ये सब एक षड्यंत्र की कड़ियां हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह तो टिप आफ दि आइसबर्ग है—एक छोटी सी चीज दिखाई दे रही है, जिसमें कई गंभीर चीजें छिपी हुई हैं। गृह मंत्री से मेरा निवेदन है कि वह टाइम रहते देश को इस षड्यंत्र से वाकिफ कराने की कोशिश करें और इसके खिलाफ सख्त कदम उठाएं।

हिन्दुस्तान की एकता और अखंडता की रक्षा करना केन्द्र का सबसे पहला फर्ज है। जिन राज्यों में ट्रेनिंग कैंप चल रहे हैं, केन्द्र को उन राज्य सरकारों को सख्त हिदायत देनी चाहिए, उन्हें निर्देश जारी करना चाहिए कि वे अपने राज्यों की सीमाओं में ऐसे ट्रेनिंग कैंप न लगने दें, जिनके बारे में सारे देश में शंकाएं व्याप्त हैं। जिन लोगों ने इन कैंपों से ट्रेनिंग ली है, उनकी लिस्ट बनाकर उनके नाम प्रकाशित करने चाहिए और उन्हें एरेस्ट करना चाहिए। उन लोगों को खुली छूट नहीं देनी चाहिए। जो लोग इन ट्रेनिंग कैंपों से ट्रेनिंग लेकर निकल रहे हैं, उनमें केवल हिन्दुस्तान के लोग ही नहीं हैं, बल्कि पाकिस्तान के पंजाबी भाषा-भाषी लोग भी हैं, जो पंजाब में गड़बड़ फैला रहे हैं। यह और भी खतरनाक बात है। पाकिस्तान के कई लोग धार्मिक भावना से प्रेरित होकर पंजाब आते हैं। एक सेंट्रल इनवेस्टिगेटिंग एजेंसी को क्वाट करते हुए अखबारों में कहा गया है कि वे लोग यहां ओवरस्टे करते हैं। गृह मन्त्रालय को उनके यहां पर रुकने के बारे में विस्तार से जांच करनी चाहिए।

मुझे आशा है कि गृह मंत्री इन सारे पायंट्स पर ध्यान देंगे। मैं विरोध पक्ष से, और विशेषकर डा० स्वामी से, निवेदन करूंगा कि वे इस प्रश्न पर दलगत दृष्टिकोण से न बोलें, बल्कि श्री बहुगुणा के विह्वल में न आकर और

श्री चन्द्रशेखर से न डर कर, अपनी आत्मा की साक्षी बना कर बोलें और इन घटनाओं की निन्दा करें।

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर) : सभापति जी, गृह मंत्री का वक्तव्य मैंने देखा है। 14 प्रशिक्षण शिविर जो उप्रवाहियों के लिये लगाये गये हैं उनमें से, उन्होंने कहा है, 6 कश्मीर में, 2 हिमाचल प्रदेश में लगाये गये। बाकी 6 के बारे में मौन हैं। एक शायद उत्तर प्रदेश में लगा, राज्य सभा में कहा है शायद। ठीक है, केंद्र सरकार का यह कर्तव्य होता है कि कहीं भी इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर लगे जिससे बिखराव की भावना मजबूत हो तो उस पर केन्द्र का ध्यान जाना चाहिये।

असल में यह वक्तव्य बिल्कुल निर्दोष होता यदि वास्तव में मंशा निर्दोष होती। अभी कुछ दिन पहले राज्य सभा में वक्तव्य हुआ उसके बाद 15 सांसदों के नाम से एक वक्तव्य निकला है जिसमें कश्मीर के मुख्य मंत्री को दोषी ठहराया गया है, और इस सदन में भी जो भाषण हुआ है उसका अर्थ भी यही है कि कश्मीर के मुख्य मंत्री की जानकारी में यह शिविर लगाये गये और गृह मंत्री के वक्तव्य से भी पता चलता है कि कश्मीर के मुख्य मंत्री कम से कम एक प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षार्थियों से वह मिले। गृह मंत्री जी पंजाब पर तो आपका शासन है और पंजाब में धार्मिक स्थल कह कर के जिन स्थानों से सरकार विरोधी, राष्ट्र विरोधी कार्यवाही हो गई है उस पर आप क्या कर रहे हैं? कश्मीर में जो प्रशिक्षण शिविर लगाये गये थे वह क्या कह कर लगाये गये थे? कहा गया यह शिविर धार्मिक उद्देश्य के लिये लगाये गये हैं। अब जब धार्मिक प्रशिक्षण के लिये शिविर लगाने का ठप्पा उन पर लग गया तब जब पंजाब में जहां आपका सीधा शासन है, वहां धर्म का ठप्पा लग गया वहां आप कुछ नहीं कर पाते हैं तो कश्मीर के मुख्य मंत्री से क्यों यह अपेक्षा करते हैं और क्यों यह धारणा पैदा करने की कोशिश करते हैं कि कश्मीर का

मुख्य मंत्री बिखराव का समर्थक है ? ऐसा आपके वक्तव्य से लगता है कि देखो उस राज्य में प्रशिक्षण शिविर लगता है जो बिखराव को बढ़ावा देता है और वहां का मुख्य मंत्री कुछ नहीं करता है। जब आप स्वयं कुछ नहीं कर पाते हैं तो दूसरे को क्यों दोषी ठहराते हैं ? इतनी बातें कही गयीं कश्मीर के मुख्य मंत्री के बारे में। हिमाचल प्रदेश के बारे में आपने क्या किया ? वहां भी दो शिविर लगे हैं। जो दोष कश्मीर के मुख्य मंत्री पर लगाना चाहते हैं, जो आपकी मंशा है, वही दोष हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री पर भी लगाना चाहिये। लेकिन उसके बारे में चुप्पी साधेंगे क्योंकि वह आपके दल का मुख्य मंत्री है।

सभापति महोदय : थोड़ा जरा अपने टाइम का भी ख्याल रखें क्योंकि बहुत सारे लोगों को बोलना है। इस वास्ते जो पाइंट्स हैं वही कहिये।

प्रो० अजित कुमार मेहता : गृह मंत्री जी...

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : आज अपोजीशन में बड़े-बड़े नेता नहीं बोल रहे हैं ?

प्रो० अजित कुमार मेहता : मैं क्या कम हूँ ? नेता का काम समाज को नेतृत्व देना है भले ही उसका कोई साथ दे या न दे। रास्ता दिखातना उसका काम है, और मैं समझ रहा हूँ कि वह कर रहे हैं। गृह मंत्री जी कहते हैं कि प्रशिक्षण शिविर में आए हुए लोग कश्मीर मुख्य मंत्री जी से मिले हैं। अभी कोई धार्मिक के नाम पर प्रशिक्षण शिविर लगाए और जिस राज्य में लगाए, उस राज्य के मुख्य मंत्री से उस प्रशिक्षण शिविर के लोग मिलना चाहें तो क्या मुख्य मंत्रों को मिलने से इन्कार कर देना चाहिए।

श्री हरीश रावत : खालिस्तान का नारा लगायें, तो मुख्य मंत्री उनके साथ नाचें।

श्री सूरज भान (अम्बाला) : पिछले होम मिनिस्टर उनके साथ क्या करते रहे।

प्रो० अजित कुमार मेहता : मैं सन् 1981 की एक घटना की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पंज में एक बंगला साहिब गुरुद्वारा है, जहां पर एक शिविर लगाया गया था। जिसको आर्गेनाइज ए आई-सी सी के सैक्रेटरी श्री प्रदुभन सिंह के पुत्र ने किया और उसमें श्री अमरीक सिंह भी आए थे। उसका उद्घाटन एक गोली चलाकर किया गया। उसमें एक सिख की मौत भी हो गई थी। आपने उस व्यक्ति को अपने दल का सैक्रेटरी बना कर पुरुस्तार दिया। इसी से आपकी मंशा का दृष्टिगोचर होता है कि आपकी वास्तविक मंशा क्या है।

बार-बार कहा जाता है कि इस चीज को पैदा करने में बाहरी हाथ है। बाहरी हाथ तो प्रकट हुआ, जब अभी आपने कश्मीर में छापा मारा, जहाँ दो गन फौट्रियों में बाहरी हथियार पकड़े गए हैं। क्या आप उनको सजा देना चाहते हैं ? मैं तो यह समझता हूँ कि आप यह सारी परिस्थिति कश्मीर की सरकार को ब्लैकमेल करने के लिए पैदा कर रहे हैं। जो गन फौट्री का अपराधी है, उसको छोड़ दिया जाए। मुझे उम्मीद है, इस पर भी आप स्पष्टीकरण देंगे।

मैं पूछना चाहता हूँ कि पंजाब की समस्या को हल करने का क्या आपका विचार है, मन है ? महोदय, पूर्वांचल में आग लगी हुई है। असम जल रहा है, पश्चिम में पंजाब की भी वही स्थिति है और अब इन सब कामों से कश्मीर को भी लपेटना चाहते हैं। यह किसी तरह से वांछनीय नहीं है। यह बिल्कुल भी राष्ट्रीय हित में नहीं है। अभी अभी हमारे एक सहयोगी ने सुझाव दिया कि इन बातों पर हमें दल की सीमाओं को तोड़ कर चलें, मैं समझता हूँ कि आप इस पर विचार करेंगे। सुझाव उनका बड़ा सुन्दर है आप स्वयं दल की सीमा को तोड़कर विचार कीजिए। आपकी मंशा सिर्फ इतनी है कि पंजाब में इस प्रकार का आतंक कायम हो। मेरे कहने का मतलब यह है कि पंजाब हिन्दू समझे कि उनके

रक्षक केवल आप हैं, जिस तरह की भावना आप काश्मीर में जगा रहे हैं। काश्मीर में भी अल्पसंख्यक हिन्दू हैं और उनकी रक्षक श्रीमती इन्दिरा गांधी है। उसी तरह की भावना आप पंजाब में जगाना चाहते हैं। पंजाब में भी अल्पसंख्यक हिन्दू हैं और उनकी रक्षक श्रीमती इन्दिरा गांधी ही हो सकती है। मैं समझता हूँ कि इस तरह केवल वोट बटोरने की राजनीति से काम लेना उचित नहीं है। यह राष्ट्रीय हित में घातक है। मैं चाहता हूँ कि आप अपने कामों पर पुनर्विचार करें, तो अच्छा रहेगा।

पंजाब में तरह-तरह के आपत्तिजनक भाषण दिए जा रहे हैं। भिंडरावाले के बारे में काफी चर्चा हुई है। मुझे याद है पिछले शुक्रवार को इस बहस को इसलिए रोक दिया गया था कि सब लोग समझे, सारा सदन समझे कि आप इस बीच में गम्भीर कार्यवाही करने वाले हैं। और सोमवार को पूरी तैयारी से इस पर बहस होगी। लेकिन आप का आज का वक्तव्य केवल खानापूरी वाला वक्तव्य था। जिस तरह से एक कहानी कही जाती है उस तरह से आपने कह दिया, राम ने लंका पर चढ़ाई कर दी, भिंडरावाले ने ऐसा कर दिया, वैसा कर दिया...

श्री रघुनन्दन लाल भाटिया (अमृतसर) : आपने भी कोई नई बात नहीं कही है। ये सब बातें तो आप बहुत दफा कह चुके हैं।

प्रो० अजित कुमार मेहता : आप इस तरह का बहाना क्यों ढूँढ़ रहे हैं ? भिंडरावाला कोई हमारा समर्थक नहीं है। उसको किसने बनाया था ? जब वह दिल्ली में आया तो किस ने उसके पांव छूए थे ? उसने अपने हरबे-हथियार के साथ दिल्ली में प्रवेश किया था, जिनमें कुछ लाइसेंस वाले होंगे और कुछ बगैर लाइसेंस वाले होंगे। क्या यह बात सही नहीं है कि तत्कालीन गृह मन्त्री जानी जैलसिंह ने उसके पांव छूए थे ? यदि यह सच है तो आप कैसे यह सोच रहे हैं कि भिंडरावाला हमारा समर्थक है या हमारा दोस्त है ? वह आपकी

उत्पत्ति है, यह आपको मानना चाहिये। जब यह मान लेंगे तो उसके खिलाफ कार्यवाही करने का काम भी आपका है। आप कहते हैं कि भिंडरावाले को कैसे गिरफ्तार करें ? क्या यह जिम्मेदारी हमारी है ? आप शासन से अलग बैठकर देखिये कि हम क्या करते हैं। हमारे समय में तो पंजाब में कोई समस्या नहीं थी। पंजाब की समस्या आप के समय में उत्पन्न हुई है, लेकिन आप आज बहानेबाजी करते हैं, यह कहते हैं कि उसका गिरफ्तार करना मुश्किल है, क्योंकि वह धार्मिक स्थान में छुपा हुआ है। क्या कोई क्रिमनल धार्मिक स्थान में छुप जाय तो उसको छोड़ देंगे ? जिस तरह से और जगह कार्यवाही करते हैं उसी तरह से वहाँ भी कार्यवाही कीजिये।

एक अजीब बात यह है—आपने एक अजीब भावना सारे भारत में फैला दी है कि सारे भारत का सिख अकाली है और सारे अकाली देशद्रोही हैं।

श्री हरीश रावत : गलत बात है। आपकी तरफ एक भी सिख नहीं है। हमारी तरफ देखिये—क्या ये मेडम सिख नहीं हैं ?

प्रो० अजित कुमार मेहता : उनको एक कैटेगरी में रखा हुआ है। क्या भिंडरावाला अकाली दल का सदस्य है ? फिर भी आप कहते हैं कि भिंडरावाले ने जो किया उसकी जिम्मेदारी अकाली दल पर है।

श्री हरीश रावत : इसीलिये कि लोंगोवाल-तोहरा-भिंडरावाले की मीटिंग होती है। पेपर्स में भी निकलता है।

प्रो० अजित कुमार मेहता : पंजाब के बारे में जब हम सोचते हैं तो मैं भूल नहीं पाता हूँ—पंजाब के मसले पर त्रिपक्षीय वार्ता यहाँ पर शुरू हुई थी, जिसमें मतभेदों का दायरा बहुत सीमित हो गया था। उस त्रिपक्षीय वार्ता से कौन हटा ? आप कहते हैं कि अकाली अपनी डिमान्ड्स पर स्थिर नहीं रहते हैं, अपना स्टैंड शिफ्ट करते रहते हैं। लेकिन जहाँ तक मुझे मालूम है—शुरू-शुरू में अकाली अपनी 45

मांगें लेकर आये थे, उन्होंने जो मैमोरेण्डम सबमिट किया था उसमें 45 मांगें थीं, लेकिन बाद में उसको घटा कर उन्होंने 10 कर दिया। आप बतलाइये कैसे उन्होंने अपने स्टैंड से शिफ्ट किया? उन 10 मांगों में भी 6 मांगें धार्मिक थीं, जिनको सरकार ने बाद में मान लिया था, लेकिन उस समय नहीं माना। अगर उस समय मान लेते तो उससे अण्डरस्टैंडिंग का वातावरण पैदा होता और बाकी के मतभेद भी समाप्त हो जाते, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। उसके पीछे एक राज था, एक राजनीतिक कारण था—आप वोट बटोरना चाहते थे, इसलिये आपने नहीं माना। त्रिपक्षीय वार्ता की सफलता आप नहीं चाहते थे, समझौता वार्ता के द्वारा समस्या का समाधान आप बिलकुल नहीं चाहते हैं।

**श्री रामधारे पनिका (राबट्सगंज) :** मंत्री जी ने बीसियों बार इस सदन में वार्ता के लिये कहा है।

**प्रो० अजित कुमार मेहता :** लेकिन कभी भी अकालियों को निमन्त्रित नहीं किया—समझौता वार्ता करने के लिये। मंत्री जी ने कंसल्टेटिव कमेटी में जो कुछ कहा—बाद में उसका इन्टरप्रेटेशन दूसरा दिया कि हमने ऐसा नहीं कहा।

हमारे कहने का मतलब है कि कभी आप अपने मंत्री जी से पूछिये कि क्या उन्होंने अकालियों को समझौता वार्ता के लिए निमन्त्रित किया है।

अब मैं कहना चाहता हूँ कि भिंडरावाला पर तो समझौता वार्ता करने के लिए तैयार हैं लेकिन आज तक जितनी बातें हुईं, समझौता वार्ताएं हुईं, और बहुत-सी बातों में मतभेद भी सीमित हो गये हैं क्या इन सारी बातों का आप एक श्वेत पत्र निकालने के लिए तैयार हैं? आप एक श्वेतपत्र क्यों नहीं निकालते हैं जिससे कि सारे देश को जानकारी मिले कि इतना काम हो चुका है? इसलिए मैं पुनः आपसे आग्रह

करूंगा कि पंजाब के ऊपर आप एक श्वेत पत्र निकालें कि इतनी मांगें पेश की गई थीं, इतनी मांगें मान ली गई हैं और इतनी मांगों पर मतभेद है। कौन-सी मांगें मान ली गई हैं, कौन-सी मांगों पर वार्ता हो सकती है, इन सबके बारे में आप एक श्वेत पत्र निकालें।

अब मैं आपसे दो-चार प्रश्न करना चाहता हूँ क्योंकि हम लोगों के ध्यानाकर्षण प्रस्ताव को नियम 193 के अंतर्गत चर्चा में परिणत कर दिया गया। इसलिए मैं समझता हूँ कि मेरे प्रश्नों का उत्तर देने में आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

मेरा पहला प्रश्न यह है कि सरकार को यह कब जानकारी मिली कि कश्मीर में उग्रवादियों के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाये जा रहे हैं और कब सरकार ने कश्मीर सरकार को इसके बारे में लिखा? यदि प्रशिक्षण शिविर धार्मिक स्थानों में लगाये जाते हैं और सरकार उनको रोकना चाहती है तो उनको रोकने का सरकार के पास क्या उपाय है?

दूसरे राज्य सभा में इस विषय पर बहस के बाद राज्य सभा के एक माननीय सदस्य श्री गुलाम रसूल ने एक पत्र लिखा था जिसमें तीन सवाल उठाये गये थे जिनमें से दो मैं अभी उठा चुका हूँ, वह पत्र अभी तक अनुत्तरित रहा है, वह अभी तक अनुत्तरित क्यों है?

मेरा अन्तिम सवाल यह है कि क्या यह सही है कि वर्तमान आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान निकालने में असमर्थ होकर देश में बेसिर पैर की अफवाहें फैला कर राष्ट्र का ध्यान मुख्य समस्या से हटाने का प्रयास सत्तारूढ़ दल और विशेष कर प्रधान मंत्री कर रही है?

सभापति जी, मैंने आपका थोड़ा ही समय लिया है, अधिक समय नहीं लिया है।

**श्री जैनुल बशर (गाजीपुर) :** सभापति जी, आज हम जिस समस्या पर विचार कर रहे हैं वह समस्या आज पूरे देश को परेशान किये हुए

है। पंजाब की समस्या को केवल पंजाब तक सीमित रखने से काम नहीं चलेगा। आज समाचार पत्रों में हमने देखा है कि बहुत से रिटायर्ड सेना के, एयर फोर्स के वरिष्ठ अधिकारी अमेरिका की जासूसी करने के इज्जाम में पकड़े गये हैं। पंजाब के उग्रवादियों को कश्मीर में और दूसरों में राज्यों में ट्रेनिंग काम हुआ है। हमारे पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान में छापामार लड़ाई लड़ने की ट्रेनिंग देने का काम भी चल रहा है।

पाकिस्तान में आज क्या हालत है? वहां की जनता वहाँ जनतंत्र की बहाली के लिए लड़ाई लड़ रही है और जो हमारा पिछला तजुर्बा पाकिस्तान के साथ रहा है कि ऐसे समय में पाकिस्तानी फौजी शासक वहां की जनता का ध्यान हटाने के लिये इस के साथ लड़ाई-भगड़ा ठान लेते हैं कहीं वे ऐसी तैयारी तो नहीं कर रहे हैं। इन सब चीजों को मिलाकर अगर हम देखें तो आज हमें अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे में दिखाई पड़ती है। हमें बाहर से भी खतरा है और अन्दर से भी खतरा पैदा होता जा रहा है। मैं तो सभापति जी इस राय पर पड़ुंचा हूँ कि पिछले तीस वर्षों में राष्ट्रीय सुरक्षा की स्थिति इतनी खतरनाक कभी नहीं थी जितनी खतरनाक आज पैदा हो गई है। हमने बाहर के देशों से लड़ाई लड़ी, चीन के साथ लड़ाई लड़ी, पाकिस्तान के साथ लड़ाई लड़ी, लेकिन उस समय पूरा देश एक साथ होकर लड़ाई लड़ा था। लेकिन अब जो स्थिति है वह बड़ी गंभीर होती जा रही है और हमारी सरकार जिस तरह से स्थिति का मुकाबला कर रही है, उससे सभापति जी, मैं संतुष्ट नहीं हूँ। कार्यवाही कुछ नहीं हो रही है। बार-बार यह कहा जा रहा है कि सरकार सतर्क है और हम कार्यवाही कर रहे हैं और आज यहां संसद में घोषणा की जाती है और कल पंजाब में कुछ ऐसी बातें हो जाती हैं जिसका असर पूरे देश के ऊपर पड़ता है। लोगों की भावनाएँ उबल रही हैं, तलवारें तन रही हैं, पूरा देश कब खून खराबे की स्थिति में आ जाए, कहा नहीं जा सकता और मैं समझता हूँ कि जब सरकार कार्य-

वाही करने पर उतरेगी तो शायद बहुत देर हो चुकी होगी। और देश आग की लपटों में भुलस रहा होगा। अगर सरकार को कार्यवाही करनी है, अगर उसकी मंशा ठीक है, अगर देशहित में काम करना है तो यह कार्यवाही आज बल्कि अभी शुरू होनी चाहिए। अगर इस मामले में देर कर दी गई तो इसका नतीजा इस देश को बड़ा गंभीर भुगतान पड़ेगा।

सभापति जी, अगर गृह मंत्री और उनका मंत्रालय यह समझता है कि पंजाब आसाम है तो वह भयंकर भूल कर रहा है। बंटवारे के जमाने में पंजाब में जो खून-खराबा हुआ, उसकी याद अभी लोगों को भूली नहीं है और मैं समझता हूँ कि अगर इस मामले में देर कर दी गई तो बंटवारे से भी ज्यादा भयंकर खूनखराबा न केवल पंजाब में बल्कि देश के दूसरे भागों में भी फैल सकता है। इस लिए जो कार्यवाही करनी है शीघ्र करनी चाहिए।

होम मिनिस्टर ने अपने बयान में यह माना है कि कश्मीर में उग्रवादियों के द्वारा ट्रेनिंग कैंप लगाए जा रहे हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स में 15 नवंबर की खबर का पूरा व्यौरा दिया गया है—“एक्स्ट्रीमिस्ट्स ट्रेनिंग इन जम्मू-कश्मीर”, हिमाचल प्रदेश में भी कैंप लगाए गए, हो सकता है कहीं और भी कैंप लगाए गए हों। गृह मंत्री ने एक पत्र मुख्य मंत्री को लिखा-आप इसको देखें। जिसका उत्तर भी उनको प्राप्त नहीं हुआ है। आखिर देश की अखंडता, देश की अखंडता, देश की सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी किसकी है? यह जिम्मेदारी कश्मीर के मुख्य मंत्री की है या यह जिम्मेदारी भारत के गृहमंत्री और भारत सरकार की है? आपने तुरंत कार्यवाही क्यों नहीं की। लेकिन आप कश्मीर के खिलाफ कार्यवाही कर भी कैसे सकते हैं। जैसा कि अभी प्रा० मेहता ने कहा कि पंजाब आपके नाँचे है, सेंट्रल रूल वहां, है जब वहाँ कार्यवाही करते हुए आप डगमगा रहे हैं तो कश्मीर में किस हौसले से आप कार्यवाही करेंगे।

अब यह भिडरावाला कौन है। यह भिडरावाला एक व्यक्ति जो पूरे देश को चुनौती दे रहा

है। जो इस माननीय संसद को चुनौती दे रहा है, वह भारत सरकार को चुनौती दे रहा है और उसके खिलाफ आप असहाय हैं, कुछ कर नहीं पा रहे हैं। उसके विरुद्ध 4-4 मुकदमें दर्ज हैं और उसको आप पकड़ नहीं पा रहे हैं। आज अगर मेरे खिलाफ मुकदमा दर्ज हो जाय, मैं भाग जाऊँ, पकड़ा न जा सकूँ तो मेरी कुड़की हांगी, वारंट होगा। दरवाजा, खिड़की, चारपाई, सब कुछ पुलिस लादकर थाने में लाकर रख देगी। भिंडरावाला के खिलाफ क्यों कार्यवाही नहीं हो रही है। क्यों पुलिस 87-88 की कार्यवाही नहीं करता? आप किस मुंह से दूसरों के लिए यह बात कहेंगे।

सभापति महोदय, यह भिंडरावाला मेरे खयाल से कोई सही दिमाग का आदमी नहीं है। वह सही दिमाग का आदमी नहीं है। क्योंकि कोई भी सही दिमाग का आदमी ऐसा नहीं कर सकता जैसा भिंडरावाला कर रहा है। भिंडरावाले पूरे सिख कौम को बदनाम कर रहे हैं। हमारे माननीय सदस्य श्री निहाल सिंह वाला ने अपने भाषण में कहा कि पंजाब में जो आतंक की स्थिति है, यदि सरकार वहां कोई कार्यवाही नहीं करेगी तो बड़ी संख्या में जो सिख हैं, उनकी भी सिर उठाने की हिम्मत नहीं हो सकती। वह भी डरते हैं और भारत सरकार भी डरती है। भिंडरावाले से पंजाब का सिख क्यों नहीं डरेगा? आज हिन्दुओं को पकड़कर मार रहे हैं, कल सिखों को पकड़ कर मारेंगे। मेरी सूचना के अनुसार वह सिख उनकी हिट लिस्ट में हैं जो उनके खिलाफ बोलते हैं। हिन्दू से बड़ा वह दुश्मन है जो उन उग्रवादियों के खिलाफ बोलता है। आप उनको सुरक्षा नहीं दे रहे हैं और न उनकी हिम्मत अफजाई कर रहे हैं। अकाली दल के लोगों ने भिंडरावाले को क्यों रखा हुआ है? क्यों अपने गुरु नानक निवास में छिपाया हुआ है? आप लोग जो उधर बैठे हुए हैं, अपने दोस्तों से कहिए और उनको निकालिए।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी (बम्बई उत्तर पूर्व) :  
 सरकार हमें दे दीजिए।

श्री जैनुल बशर : सरकार क्यों दें? आप नहीं निकाल सकते। असलियत यह है कि अकाली दल भी भिंडरावाले से डरता है। जब हमारी भारत सरकार कोई कार्यवाही नहीं कर रही है तो पूरे पंजाब में लोग उससे डर रहे हैं। आज इस देश का जो बहुसंख्यक वर्ग है, उसकी तारीफ करनी पड़ेगी कि वह प्रोबोक नहीं हुआ है। भिंडरावाले ने जो ब्यान दिया है और जो बातें कही हैं, उसका प्रोबोकेशन होता है तो कल से हिन्दुस्तान जल रहा होता और हम सब लोग संसद में बैठे हुए तमाशा देख रहे होते। मैं, भारत सरकार और गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूँ कि आप कार्यवाही शुरू कीजिये। पूरे देश में यह धारणा पैदा हो गई है कि सरकार भिंडरावाले के खिलाफ कमजोरी दिखा रही है और डटकर मुकाबला नहीं कर रही है। अगर, यह इम्प्रेसन पूरे देश में घर कर गया कि सरकार कमजोर हो गई है तो इसका बड़ा भयंकर परिणाम निकलेगा। हमें उधर बैठे हुए लोगों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए क्योंकि वे तो ऐसा चाहते हैं कि हमारी बदनामी हो। आज इस देश की एकता और सुरक्षा को कायम रखने की जिम्मेदारी हमारी पार्टी की है। काश्मीर के संबंध में हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि ये लोग क्या कहते हैं? काश्मीर के संबंध में इन्होंने बहुत बातें कीं। राज्य और केन्द्र के संबंध में बहुत बातें कही गईं। अगर, केन्द्र को कमजोर कर लिया जाए तो इस देश में एकता कायम नहीं रह पायेगी। केन्द्र सरकार इस मामले ढिलाई करेगी तो इसका बहुत बुरा नतीजा होगा। काश्मीर में जहां इस प्रकार के कैंप लग रहे हैं, वहां की सरकार यदि कुछ नहीं करती है तो उसको बरखास्त करने में क्या हर्ज है? यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है। जब कांग्रेस आई दल की सरकार बर्खास्त कर सकते हैं तो वहां की सरकार को क्यों नहीं कर सकते? यही नहीं, आज देश के उत्तर पूर्वी और पश्चिमी सीमा पर एमरजेंसी लगाए जाने की आवश्यकता है। काश्मीर की स्थिति बहुत विकट है। आज तीस साल से काश्मीर एक समस्या बना हुआ है। काश्मीर में देश-द्रोही



ताकतों की कमी नहीं है। आज काश्मीर में ऐसे एलीमेंट मौजूद हैं जो काश्मीर को भारत में मिलाए जाने के विरुद्ध हैं। उनमें उग्रवादी भी हैं। काश्मीर और पंजाब बिल्कुल एक दूसरे से मिले हुए हैं। अगर दोनों उग्रवादियों में ताल-मेल हो गया और पंजाब की तरह काश्मीर में भी उग्रवाद फैलता चला गया तो ये दोनों मिल कर देश के लिये बहुत बड़ी मुसीबत पैदा कर देंगे। काश्मीर और पंजाब की समस्याओं को अलग अलग नहीं देखना चाहिये, हाथ मिला कर देखना चाहिये। काश्मीर में कुछ हो गया तो पंजाब में भी होगा और पूरे देश में जो अल्प-संख्यक मुमलमान हैं, हैं, सिख हैं, उनका क्या होगा? अगर पंजाब में कुछ होता है तो उत्तर-प्रदेश, बिहार, मद्रास आदि दूसरे राज्यों में उसका रिफ्लेक्शन और फिर काउंटर रिफ्लेक्शन होगा और तब पाटिशन जब देश का हुआ था, जिस प्रकार की स्थिति तब बनी थी, उस बार की स्थिति अगर पैदा हो गई और बाहर की ताकतें जो हमें कमजोर करने की कोशिश कर रही हैं उन्होंने हमारे लिए खतरा पैदा कर दिया तो जो भयानक स्थिति बनेगी उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस वास्ते मैं जोरदार शब्दों में मांग करता हूँ कि सरकार तुरन्त कार्रवाई करे, भिडरांवाले को गिरफ्तार करे। कैसे गिरफ्तार करेगी, गुरुनानक निवास में जाकर करेगी या न जाकर करेगी, यह मैं सरकार पर छोड़ता हूँ, यह निर्णय सरकार स्वयं करे। लेकिन देश की 95 प्रतिशत जनता को हम यह समझा नहीं पा रहे हैं कि गुरुद्वारों में पुलिस क्यों नहीं जा सकती है। मैं मुसलमान हूँ। मेरी मस्जिद में पुलिस जा सकती है, दरगाहों में जा सकती है, विश्वनाथ मंदिर में जा सकती है, गिरजाघरों में जा सकती है, बौद्ध विहारों में जा सकती है तो गुरुद्वारों में क्यों नहीं जा सकती है। गुरुद्वारों की पवित्रता पुलिस के जाने से नहीं बल्कि क्रिमिनल्ज को वहां पनाह देने से समाप्त होती है, उनको छिपाने से समाप्त होती है, उनको वहां शरण देने से समाप्त होती है। मेरी जोरदार

मांग है कि अभी आप कार्रवाई शुरू करें। थोड़ी और देर आप करेंगे तो फिर बहुत देर हो चुकी होगी और यह देश आग में जलता हुआ नजर आएगा।

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : (Bombay North East) : Sir, the ruling party member, Shri Zainul Basher's speech today reminded me of the very speech Shri Morarji Desai had delivered very recently in one of our party conclaves. This just shows that ultimately the ruling party will have to realise that it was only during the Janata party rule that we were able to keep peace in the country. Although our party being new we could not keep peace within the party yet we kept peace within the country.

Sir, the discussion today is on the topic of the situation arising out of reported training camps for training of extremists of Punjab in its neighbouring areas. Now, what is the meaning of neighbouring areas? I was surprised to read the statement because I had expected some specific evidence being presented about the involvement of neighbouring areas. There is no mention about Pakistan in this entire statement. This may indicate a change in government's attitude. Maybe now they want to play down the Pakistani factor because, perhaps, it is not being credible. I do not know. Jammu and Kashmir has been brought up into focus. There is only one indirect to Pakistan and I do not know whether he means —

“According to some reports with the Government consignment of arms brought from a neighbouring country has reached some organisers of these camps in Guru Nanak Niwas, Amritsar.”

Brought by whom? sent by whom? It could be smug gled. Was it sumggled? Therefore, Sir, I am sorry that in this Parliament we are being consistently innuendoes about the whole situation. We want to know in specific terms what is happening in Punjab. You say, foreign hands in one place; you say Pakistan, you say, Jammu and Kashmir, all these you say. These are all innuendoes. What is the concrete evidence? What is it that you want to place before the House? If you want the support of the entire House you will have to take the House into confidence— Sir, all of a sudden, this Jammu and

Kashmir has come into focus. I really don't know how this has happened. I went through all the Press Cuttings and I found that the first reference to Jammu and Kashmir being involved in what is happening in Punjab was a statement by the ruling party's General Secretary Mr. Rajiv Gandhi, who, according to UNI. told Vichar Vibag of the Congress-I. Now, Sir, I do not know that Congress-I had any Vichar, but they have a Vichar Vibag. There was this Seminar in Delhi on the 12th November and he said.....

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS, AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : You are not supposed to know the inside functioning of the party.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Well, it has come in the Press. I am sorry to say. He must have leaked it out to the Press and it says like this :

'Mr Rajiv Gandhi told a conference of the Vichar Vibag of Congress-I in Delhi that extremists in Punjab are being trained in Pakistan and Jammu and Kashmir'.

Now Mr. Rajiv Gandhi is not here. He is a Member of Parliament. We hardly see him here. (*Interruptions*) There are some Members of Parliament who are permanently absent. But, anyway, he should have made the statement in the House but he made it in the Vichar Vibag.

16.56 hrs.

[MR. DEPUTY SPEAKER *In the Chair*].  
He said :

'Extremists in Punjab are being trained in Pakistan and Jammu and Kashmir'

—and then it adds in quotes—

"Recalling the harassment and arrests of Congress-I workers in connection with the Kashmir Bandh on the 7th of November, Mr. Gandhi said that these were examples of unabashed interference of big powers in the affairs of small nations."

Sir, I do not understand and how the arrest of Congress-I workers in connection with Kashmir Bandh establishes an example

of unabashed interference of big powers in the affairs of small nations.

SHRI BUTA SINGH : Bad reporting.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Now, may be bad reporting, but he should have corrected it. He has a big Secretariat and you are ruling party...

SHRI BUTA SINGH : You people rely so much on the Press unfortunately. Everything that you say here is based on Press Report. It is incoherent, it is baseless ; and unfortunately you have a bad case.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : All right. I will now rely on the information supplied by you. So far I relied on information supplied by newspapers which he rejects. They should have at least contradicted it.

Now, Sir, I will go to the information supplied by the Minister in Parliament-I hope that that at least is unadulterated. (*Interruptions*) There is Question No. 458. Now, on foreign hands, you know, Sir, how much has been said. What is this foreign hand ? Is there any evidence ?

The other day I mentioned this,—about the Governor's statement, which was made on 15 November in Jullundur about there not being any foreign hand in Punjab. The prime Minister reacted violently and ultimately the Governor was given\*\*

(*Interruptions*)

PROF. N.G. RANGA (Guntur) : What a word :

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I withdraw it, if that word is unparliamentary. He was pulled up. I want this word off the record...

MR. DEPUTY SPEAKER : You can say, Prime Minister pulled up the Governor,

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Strongly pulled up the Governor...

SHRI HARIKESH BAHADUR : That word is not unparliamentary, Sir.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Later on he said, well, he did not really mean what he said, etc.

Now, however, the Governor has given a taped interview to the *Indian Express* sometime earlier. This was on the 6th of November. And it appeared in the Sunday *Indian Express*. The question was put squarely to Mr. Pande. Well, he is your officer, that is, Governor under Central rule ; he is directly under you, a man working under your instructions and the question was put by *Indian Express* :

‘Do you see a foreign hand in the latest happenings in Punjab ?’ And Mr. Governor replies :

‘I have not been able to discern anything yet. Different people who have met me have expressed their suspicions about foreign elements in the incidents in Punjab. No such information or facts have come to my knowledge.’

This is what Mr. Pande, the Governor of Punjab, says in a taped interview to the *Indian Express* published on the 6th November. Now, the hon. Minister asks whether I rely on the newspaper report. I am relying on the Governor.

Then, Sir, a question was asked in the Rajya Sabha on 17th November 1983. Question No. 458. This is for Mr. Buta Singh’s benefit who generally does not follow what is going on in Parliament. Otherwise, he would not say what he said. Now, the question is regarding Crimes in Punjab. This question is like this—

“458 (c) whether Government have investigated into the alleged role of Pakistanis masquerading as Indians causing disturbances in Punjab.”

This was the allegation made by Mr. Zainul Basher, a minute ago in a breezing manner about the involvement of foreign powers. The reply given by the Minister is like this.

“(c) & (d) : Government have come across some reports in this regard for which enquiries are being made.”

When you say the Government has come across the report, it means that the Government has seen some newspaper reports, But somebody came and told them “it is not based on authentic information. It is not the internal intelligence report. Some report they may have heard

from the radio broadcasts and they are investigating and making enquiries”. I want the Minister to tell us whether has completed his enquiries and whether he has something specific to say. Now, there is another question, that is, Q. No. 1112 was put in the Rajya Sabha on 1st December 1983. This question reads like this.

“(a) whether Government’s attention has been drawn to the news item appearing in *Hindustan Times* of 19th October, 1983, to the effect that. CIA was training Sikh terrorists to Pakistan ; and

(b) if so, what are the details in this regard ?”

Here the reply has been given by Nihar Ranjan Laskar.

“(a) & (b) Government have come across some reports in this regard. The authorities are keeping a close watch in this regard.”

Sir, what is this answer ? Is it a fact ? It is not a fact. Mr. Zainul Basher was quoting the *Hindustan Times*. The *Hindustan Times* had this report. But here what the Government is saying is that he is keeping a close watch. Is it true ! Is it what you confirmed or do you deny it ?

Now, coming to the Unstarred Question No. 243 in the Lok Sabha, what did the Government say ? The question is like this.

“(a) whether it is a fact that Pakistani agents are helping in making bombs and some people are being trained in sabotage there and there is a sustained campaigning and rumour-mongering to create panic ?”

The reply given by Mr. Nihar Ranjan Laskar, is as like this.

“(a) Government have come across some reports in this regard for which enquiries are being made.

(b) There is no confirmed evidence at present in this regard.”

Again Unstarred Question No. 279 put in the Lok Sabha, dated 16th November 1983, reads like this.

“(a) whether during current year six explosions took place in Delhi.

(d) whether any foreign hand has been found ?”

The answer given by Mr. Venkatasubbaiah, reads like this.

“(a) & (b) : During the current year upto 31st October 1983, 12 explosions have taken place at the following places in Delhi.....”

(c) Investigations conducted so far do not show any evidence of involvement of any foreign hand in these cases.”

Now, I can give you some more information. He talks of criminals, criminals in the Golden Temple and they should be handed over. Now, I paid a visit to the Golden Temple some time ago. They said that Room No. 32 was Khalistan headquarters. The passport is being issued and the currency is being issued and so on from there. Mr. Balbir Singh Sandhu is sitting there handling the whole thing and the Government of Khalistan is functioning from there. Now, I made a surprise visit to Room No. 32 there. They took me there and opened the door. There were two ‘charpayees’ lying there and two little boys were sleeping. That is all and there was nothing else. Then I asked the newspaper men “how did you say that the room No. 32 was the Khalistan’s headquarters ?”. If it is a headquarters, it means telephone facilities, a cabinet for keeping files, some furniture, some printing press, all these things, should be there. At least something should be there. All these things cannot be removed within five minutes before I went there. Suppose, tomorrow in Maurya Hotel, somebody pays Rs. 600 for room rent and calls a press conference and says-for instance some Tamilians can go there and say-that this is the headquarters of the Eelam.....

MR. DEPUTY-SPEAKER : why not yourself ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I want the whole of Sri Lanka, not a part of Sri Lanka.

Then I asked them that criminals are hiding in the Golden Temple, why don't they hand them over to the Government. They said : Where are they ? I told them that they had got a list of forty persons

sent by the Chief Minister, Shri Darbara Singh. They said that forty-member list is ridiculous, because out of those forty persons, eighteen cannot be in the Golden Temple. I asked them why. They said : Six are in Germany, six are in Canada, two of them have been let out on bail, and two of them have already died. Like that they eliminated eighteen names. I asked Sethi, if it was a fact, and he told me—now he may deny,—that it was a fact : those eighteen people cannot be in the Golden Temple. And that list was sent by Darbara Singh by registered post to the Golden Temple I do not know, why he did not send it by a messenger. I say again today ; that time when I went, I said to Longowal also that you must do something about these criminals. He set up a screening committee. Naturally, that screening committee cannot include any representative of the Government, because Government and they have got a bad blood, but they had included some independent people from Amritsar, whom I know. They went from room to room and took the names, and they did not find any criminals. Criminals come and go ..... (*Interruptions*). Yes, there were some people of my party, sympathisers, they were also there. Unless the Government gives a list of names, the charges against them, their photographs, and their addresses, how can you expect the Akali Dal or the SGPC to hand over the criminals. Everytime I ask Mr Longowal about this, he says that they are not there. You tell them where they are, where they are hiding, their names and give them their photographs. In this regard, again loose talk has been going on.

Again Rajya Sabha, Shri Sethi answered Question No. 41 on 17th November, 1983. The question was :

“...the number of terrorists and extremists so far arrested in Punjab ;

(b) the number amongst them who have been chargesheeted ;

(c) the names and particulars of criminals who are alleged to have been taken shelter in Gurdwaras ;

(d) whether those criminals have been proclaimed as absconding ;

(e) whether the names and particulars of such absconders have been conveyed to the Gurdwara authorities ; and

(f) if so, the response thereof : ”

And the answer of the Minister was :

“A list of persons who are so far reported to be hiding in Golden Temple complex laid on the Table of the House. Most of these persons have been declared proclaimed offenders.”

Then, there is a list of names ; Just a list of names. This was a Starred question, naturally some questioning took place and in the questioning we found very strange things to be said by the Minister. The Minister was asked, why he did not give the particulars, and if he had given the particulars. No particulars have been given. He was asked, if he had given what charges those people were guilty of, and for what they had been charged The Minister said No : from time to time we have sent a list.

Now, there are forty five names. Harminder Singh everybody knows that there can be thousands of Harminder Singhs, as there can be thousands of Subramaniam. Tomorrow, someone can say that Subramaniam is hiding in the Meenakshi temple....(Interruptions). There could be so many persons of these common names,

(Interruptions)\*\*

MR. DEPUTY-SPEAKER : Do not record it

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Now let us take\*\* But that does not mean a particular person. Generally speaking, the Sikh names are common names. All the names given here in the list common names, and no particulars are given. Shri Sethi thinks that he can get away with it.

The Government, according to Unstarred Question No. 1054, in the Rajya Sabha, have arrested 5351 persons in the mopping operation in the State. During the period from 18-10-1983 to 24-11-1983 i. e. since the President's Rule, Now, how many of them are known to be spies or agents of foreign powers or trained in Jammu and Kaskmir ? Answer is none. 5,351 persons they have arrested and they have not caught even one person to establish that foreign hand is involved. This way, I am sorry to say,

the Government goes on alleging and alleging, but the Parliament is not told what is this solid evidence.

Now, Sir Mr. Pande, the Governor of Punjab in Gurdaspur on 11th November said, and it is reported in The Statesman on 13th November the following. He was asked a question about the criminals hiding in the Golden Temple and whether any list has been supplied ? And what does Mr. Pande say ? According to the Statesman, he said he was not aware of any list of criminals taking shelter in the religious places that has been supplied to the SGPC President.

Now, here the Governor says he does not know of any list which has been supplied and Mr. Sethi says there is a list supplied to the SGPC. President. But in the Rajya Sabha when questioned by my colleague, Mr. Shahabuddin and others,...

MR. DEPUTY-SPEAKER : Please conclude.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : I am finishing. I have such a solid material and even Minister has not given such a solid material to Parliament. I am Just concluding.

The question is according to the Governor there is no list, but according to the Minister there is a list supplied. When my colleague, Mr. Shahabuddin asked in Parliament what are the names, somebody called Talvinder Singh and somebody called Harminder Singh. Now, which village does he belong to ? What is the charge ? Have you got the photograph. None of that. So, how have we to believe the Government ?

They say arms. Everyday we hear about arms. Well, here again is a question No. 327 of the Lok Sabha :

“Whether it is a fact that during raids in certain villages in Punjab, a big haul of arms was made ? If so, please give details.

The answer was :

“227 weapons have been recovered during the raids since October 18” i. e. since the President's Rule.”

227 guns have been recovered.

Now Unstarred Question No. 340 is :

"Whether it is a fact that 'made in Pakistan' marks have been found in arms seized in violence incidents in Punjab ?"

The answer is that "the Government of Punjab have informed that only one Sten-gun and one revolver of Pakistani markings was recovered in Amritsar."

That is, out of 227 guns recovered, only two guns have Pakistani markings 225 have had what markings-Spanish, markings, Dhirendra Bramhachari markings ? So, this is the question. He has to answer to us. They want our support, but we want unadulterated information. We want solid information. We do not want all these innuendoes. We do not want all these cover-ups. When you say foreign hands, what is your evidence ? Give it in writing. Give it in form where we can analyse. Though they are there in Prime Minister's speeches or in Rajiv Gandhi's speeches or is anybody's speeches have no value. What is stated in Parliament is important here. We come across reports government have not found any evidence, government is looking into the matter. All this is told here to us.

We are asked condemn the Akali Dal on the basis of such frivolous innuendoes. We are not prepared to do that. We consider Akali Dal as our brother party. They were with us in the Government. They are in agitation, there is no doubt about that. If they do something wrong, we are prepared to tell them. I told them that you have got criminals in the Golden temple ; everybody says that. They say, no. You tell us where it is ? We will open the screening committee. You come with us. Tell us which room and we will take you to every room. This is what they say to us. What do we do ?

Sir, in conclusion I would say.....

MR. DEPUTY-SPEAKER ; After all, concluding.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : ...I don't want this Government to bluff us. The Government should take us into confidence. If the Government does not want to do it openly, you call a small meeting or

you call, what is called, secret session. There is a provision for it under the Parliamentary rules where there is no press, nothing. Do something, but don't do this allegation. Don't create this general impression. Already in the country there is an impression that all Sardars are wanting Khalistan. It is not true. There may be all kinds of organisations that have come up as a reaction.

I do not at all approve of Mr. Bhindranwala making the Statement that he did. I did meet him when I went last time to Amritsar. When I meet him next, I will certainly tell him. If some child, a Hindu's son makes a statement and says : 'We will kill all Sardars' — we have never heard it that he even exists — the answer Bhindranwale should give is : 'We all Hindus and Sikhs, will join together to defend ourselves against these extremist elements' and not say, 'We will take revenge,.. But he is only 40 years old ; and he is an immature person in these matters. In fact, he would not have got this prominence but for these people.

I would be happy to help the Government ; but they must take us into confidence.

MR. DEPUTY SPEAKER : Is he younger to you, or older ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : He is a little younger to me, but a little older than you.

MR. DEPUTY SPEAKER: But I am 60.

(Interruptions)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : So, I would like Government to treat us like Members of Parliament, and us the truth at least.

I may draw your attention to "The Telegraph" issue of 28th November which speaks about Ranjit Singh, the prime suspect in the case of murder of the Nirankari chief. When he entered the SGPC office, according to this report :

".....the SGPC authorities asked Ranjit Singh to vacate the Golden Temple premises so that it would not cause any embarrassment to them."

There are plenty of reports that when they come to know that somebody who is a criminal has come there, the Akali Dal, Shri Longowal and his group which is a moderate group, take steps. But the Government is trying to get political advantage and to put them in the wrong. This is the feeling which they have.

PROF. N.G. RANGA : No.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : You may not know. Their feeling is that you are trying to suppress them ; you are trying to get electoral advantage over them. You are trying to blacken their name.

The Sikhs are an emotional people. They have this feeling : "Look ; there is no public sector in Punjab. There is nothing. We have to fight. We are only 3% ; but we produce 75% of the procurement of wheat." They are prosperous by their hard work. They are emotional people. They fight. They bear the brunt of any attack. And you go on caricaturing them as anti-nationals in this kind of loose talk involving Pakistan, Kashmir etc. So, what the Government should do is this : if they want to take action against criminals, we will help them. Let them take action. But they must not suspend negotiations.

The only thing left now in the Punjab agitation is Akali's one demand, viz. Chandigarh — because the water issue which was pending, has gone to Supreme Court. It was the demand of the Akalis that Supreme Court should take it up. The Chandigarh issue remains. They promised Chandigarh to Punjab in 1970. And about giving Fazilka and other areas to Haryana, they can appoint a Boundary Commission, and work out contiguous areas ; and Chandigarh need not be transferred till the Boundary Commission completes its work. They can give Rs. 100 crores to Haryana to build a new capital.

PROF. N.G. RANGA : Is it so simple ?

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Yes ; it is so simple. You are complicating it. I say today with complete confidence : if the Government announces its decision to hand over Chandigarh to Punjab with all these supplementary things added to it, about boundary commission, the Akalis would withdraw the agitation. They would call it

off, because they would consider their agitation to have been successful.

PROF. N.G. RANGA : Let them say so.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY : Why should they say so ? I am convinced about what happened in the tripartite discussion. You have enough material in the tripartite discussions. They are not any longer going to tell you that they would do this and that. You are the Government. You take these steps. If you don't negotiate with them, then I think you are doing it for political reasons. In that case, I would say that they have a point. After all, many Akalis tell me : Look at this ; they are talking about Bhindranwala. Many Akalis—these sober elements—are not happy about the way Bhindranwale is behaving. But they say : 'What about Dhirendra Brahmachari ? But for Farooq Abdullah, he would have been carrying on with all the Apsaras and carrying guns there, and bringing them back here. (Interruptions) Yes ; he would have been still flying there, and flying back. He has been carrying guns without licence. His import licence is a forgery. They say : 'Look at this. There is a difference in treatment. Because one happens to be a Yoga teacher in high places, nothing is being done.

But for Dr. Farooq Abdullah this Brahmachari, this scandalous swami would not have come before the public eye. So, they say, why are they treating two persons differently ? Why Bhindranwale is being singled out every day ? No discussion. Every day, in Parliament, there is *hullal* on Bhindranwale but no *hullal* on Brahmachari. So, even these things are utilized. You show your even handedness and we will help you. All the material I have placed will show that government have no shred of evidence to talk of foreign hand about weapons from abroad or about 11 the camps in various places and they are using all these. This is a great bluff, manifestly imaginary. They are trying to create a case ; they are trying to blacken the Akalis' name. They want our support. We cannot give our support to them. But if they come forward with genuine information and take us into confidence, we would be happy to help them.

**श्रीमती गुराबिंदर कौर ब्रार (फरीदकोट) :** डिप्टी स्पीकर साहब, जो कार्लिंग अटेंशन दिया था ट्रेनिंग कैंपों के बारे में, उसको आपने 193 में चेंज कर के हम सब लोगों को मौका दिया है इस पर बात करने का। अभी-अभी हमारे कुलीग इस पर बोल चुके हैं। होम मिनिस्टर ने जो स्टेटमेंट दिया है उसमें लिखा है कि 14 कैंप हुए, जिसमें से 6 कश्मीर में हुए। एक बात और नोट करने की है कि 1981 और 1983 के बीच ये कैंप वहां लगाए गए। पहले कभी कोई ऐसा कैंप वहां नहीं लगा। और यह जो पुंछ एरिया है, बहुत सेंसिटिव एरिया है और यह वह लाइन है जहां से आक्युपाइड कश्मीर को लोग जाते-आते हैं। उनकी एंट्री होती है और इधर आते हैं। फिर इस सबका क्या मतलब है। "डेली रिकार्डर" और "कश्मीर टाइम्स" में वहां पर इन्होंने कहा है कि एक कैंप देरा वंडा बहादुर, नियर रियासत ऊधमपुर में 25 दिसंबर से 30 दिसंबर 1981 को लगा। दूसरा... (व्यवधान)।

**डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी :** ये अखबार हैं, इन पर आप विश्वास कर रहे हैं ?

**श्रीमती गुराबिंदर कौर ब्रार :** तो फिर सारे अखबार बंद कर दीजिए।

**डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी :** उस दिन बूटा सिंह जी कह रहे थे...।

**श्रीमती गुराबिंदर कौर ब्रार :** ठीक है, आपको पता है चुरू की खबर का क्या हुआ। भिडरावाला ने जो स्टेटमेंट दिया वह भी गलत दिया कि सब हिन्दुओं को पंजाब से निकलना पड़ेगा। प्रेस की भी जिम्मेदारी है। प्रेस को जिम्मेदार होना चाहिए। यह कोई बात नहीं है। पंजाब में जो हालत पैदा हुई है, उसको संभालना सबकी जिम्मेदारी है। चाहे अपोजीशन के लोग हों या रूनिंग पार्टी के लोग हों या प्रेस वाले हों। इसके साथ इस तरह से खेलना नहीं चाहिए, सबको जिम्मेदारी से काम लेना चाहिए। सबको पार्टी और रिलीजन से ऊपर उठकर और नेशन का खयाल करते हुए इस

जिम्मेदारी को निभाना है। यह मेरी आप सबसे अपील है। करना तो बाद में चाहती थी लेकिन आपने पहले ही करवा दी।

ये जो कैंप लगे हैं, इन कैंपों का क्या मतलब है। (व्यवधान)

आप मुझे बात करने दीजिए। आप तो बड़े हम दर्द हैं सिक्खों के, कैंप लगवा रहे हैं, जो वहां जाकर स्पीच दे रहे हैं, स्टेटमेंट दे रहे हैं, तो फारूख साहब को बोलिए कि इसकी इन्व्जारी कराकर बताएं कि क्या गलत है और क्या ठीक है तो हम इसको एक्सेप्ट करेंगे।

इण्डिया टू डे निकलता है। उन्होंने भी पुंछ का जिक्र किया है।

इण्डिया टू डे में पुंछ के कैंप के बारे में छपा है। फारूक साहब भिडरावाले की तस्वीर रखते हैं। यह कहां तक सच है क्योंकि यह तो प्यार-मोहब्बत की बात है ?

**श्री अब्दुल रशीद काबुली :** मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि महात्मा गांधी की तस्वीर है।

**श्रीमती गुराबिंदर कौर ब्रार (श्रीनगर) :** शुरू से ही गुरुमत प्रचार के लिए कैंप लगते थे। इसमें बच्चों को बताया जाता था कि सिखी क्या है ? इसलिए, यह कोई बुरी बात नहीं है, शुरू से ही लगते आए हैं। ऐसे ही कैंप और जगहों पर भी लगते रहे हैं। रिसेन्टली जो कैंप हुए हैं और वहां जो स्पीचेज हुई हैं, उनको निकलवाइए। मैं होम मिनिस्टर साहब से रिक्वेस्ट करूंगी कि पुंछ और पाकिस्तान ओक्युपाइड काश्मीर के बारे में कुछ न कुछ अवश्य करें। आपको पता होगा कि पंजाब में पहले कैनाल वाटर की जगह से मोर्चा शुरू हुआ। अमरीक सिंह और तारा सिंह ने कहा कि हम मोर्चा लगायेंगे। अमृतसर में गोल्डन-टंपल है। वहां रामदास सराय है और गुरु का लगर है। वहां रहने को जगह मिल जाती है। इसलिए, वहां कोई तकलीफ नहीं है। वहां मोर्चा कभी फेल नहीं होता। शुरू-शुरू में एक्सट्री-



मीस्ट्रस ने प्रशंसा दिखाया। मैं स्वामी जी से इस बात पर सहमत नहीं कि इसको ठीक करने का सरकार का मन नहीं है। मैं यह कहना चाहती हूँ कि लॉ एण्ड आर्डर को फर्मली डील किया जाए। यह सबके लिए अच्छा होगा तभी कुछ हो सकता है। पंजाब में ही नहीं बल्कि किसी भी जगह ऐसी बात हो जाती है तो हर किस्म के लोग सिर उठाना शुरू कर देते हैं। पंजाब में एन्टी सोशल एलीमेंट्स भी हैं। दल खालसा, बब्बर अकाली दल, नैक्सलाइट्स और स्मगलर्स हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बांडर पर स्मगलर्स खास रोल प्ले कर रहे हैं। इससे एन्टी सोशल एलीमेंट्स को मौका मिल जाता है। हैदराबाद के रायट्स के बारे में वहाँ मेरे कुछ दोस्त हैं, उन्होंने बताया कि दो आदमी स्कूटर पर आते थे। उनके पास छुरा होता था। वे एक ही जगह पर छुरा लगाते थे।

पेट में मारते तो एक ही जगह और ऐसी दबाई लगी होती थी कि इन्सान मर जाता था, बचता नहीं था। इसी तरह से पंजाब में स्कूटर पर लोग आते हैं और यही काम करते हैं। वहाँ बंदूक और पिस्तौल का इस्तेमाल होता है। मैं समझती हूँ कि इसके पीछे बड़ी भारी फोर्स है जो चाहती है कि इस एरिया में डिसटर्बेंसिस हों और न सिर्फ इस एरिया में बल्कि सारे भारत में हो और उस दशा में जैसे मच्छरों के लिए गंदगी ब्रीडिंग ग्राउण्ड बन जाता है वैसे ही इन लोगों के लिए बन जाए और गड़बड़ और अनरेस्ट में इनको अपना काम करने का मौका मिले। एक चीज आप करें। जो नक्सलाइट हैं उनके साथ आप उस तरह से बरताव करें, नक्सलाइट का करें और दूसरे के साथ दूसरा करें। पट्टी के नजदीक जो घटना हुई यह मेरा इलाका है। यहीं मेरी पैदाइश हुई थी। वहाँ पर चार हिंदुओं को निकाल कर मारा गया है। मेरा मन नहीं मानता है कि किसी सिख ने ऐसा किया होगा। यह कहा गया है कि बाहर उनको निकाला गया तो किसी ने कहा कि मैं मोची हूँ, हिंदू नहीं हूँ, किसी ने कहा कि मैं गोल्डस्मिथ

हूँ, हिंदू नहीं हूँ। किस सिख को पता नहीं मोची या गोल्डस्मिथ हिंदू होता है या नहीं। कोई इस वजह से उनको छोड़ देता। यह फिजूल की बात थी। यह सोचने वाली बात है। आप यह भी जानते हैं कि एक ही फैमिली से पैदा हुआ हिंदू फैमिली का पहला लड़का सिख बनता है। यह आज की बात नहीं है, सदियों से चलती आई है। ऐसे काम वही लोग कर सकते हैं जो यह चाहते हैं कि गड़बड़ हो। मैं जैनुल बशर साहब से एक बात कहना चाहती हूँ। हम हिंदुस्तान में कोई लड़ाई नहीं होने देंगे, हम लड़ेंगे नहीं। इक्का दुक्का जो घटनाएं हो रही हैं इनको हमें बन्द करना है। जब छः को मारा गया कपूरथला के पास और बाद में चार को मारा गया तो सभी ने अकलमन्दी से काम किया, सभी पार्टियों ने कहा कि हम ऐसी शरारत नहीं होने देंगे, सिविल वार जैसी चीज नहीं होने देंगे। हमारे विरोधी भाइयों ने तथा दूसरों ने जब्त से काम लिया। लॉगोवाल ने तथा दूसरों ने भी इसको कंडेम किया। इस मसले को आप अच्छी तरह समझें। क्या यह नक्सलाइट्स का काम है, स्मगलर्स का है या किसका है। स्मगलर तो उधर से बंदूक लाते हैं और इधर से दूसरी चीजें उधर ले जाते हैं। स्मगलर्स तो गुंडे ही होते हैं। उनके साथ निपटना हो तो पूरी तरह से उनके साथ आप निपटें। जो इस तरह के काम करते हैं उनका तो उद्देश्य यह है कि कम्युनल रायट्स हों और फिर वे उसमें फ्यूल लगाएं ताकि सीसैशनलिस्ट टैंडीस बढें। बाहर की बहुत सी एजेंसीस हो सकती हैं जिनका इस सबके पीछे हाथ हो।

अमृतसर के नजदीक चाटीचिड के पास उन्होंने बस को रोका, अपना काम किया और भाग गए। यह अफसोस की बात है कि वे पकड़ नहीं गए। लेकिन इण्डिया टूडे में जो निकला है और श्री प्रीतम सिंह भिंडर ने जो कहा है वह मैं कोट करना चाहती हूँ :

“The criminal today is far ahead of the police ; Yet things will improve. We are trying to modernise, re-equip and re-orient the police force.”

हम यह तो नहीं कह सकते कि पंजाब में पुलिस बड़े हौसले से काम कर रही है। वह डीमारेलाइज्ड है। सरकार को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर क्रिमिनलज फार ऐ हेड हैं, तो हम क्यों नहीं होते। यह एक जिम्मेदार इन्सान का स्टेटमेंट है। मिनिस्टर साहब देखें कि क्रिमिनलज किस बात में ऐहेड हैं और हममें क्या कमी है, ताकि उसको दूर किया जाए।

उन लोगों का मेजर आब्जेक्टिव यह है कि हिंदू और सिख कम्युनिटीज में डिसट्रस्ट पैदा किया जाए। वे पूरी ताकत से इसकी कोशिश कर रहे हैं। हमारा फर्ज है कि हम कोशिश कर के हिन्दुओं और सिखों के आपसी डिसट्रस्ट को दूर करें। थोड़े से यंग लड़कों का ब्रेन-वाश भी किया जा रहा है। अगर ज्यादा देर न करके उन्हें सही रास्ते पर लाया जाए, तो पंजाब और ज्यादा तरक्की करेगा। पंजाब हमारे देश का एक इम्पोर्टेंट बाजू है। यहां पर गेहूं और बहुत सी दूसरी चीजें पैदा होती हैं।

आज की खबर है कि कल रामतीर्थ मंदिर के, जो एक बड़ा तीर्थ-स्थान है, लाड जगन्नाथ, उनके भाई और सुभद्रा बहन के आइडलज को जलाया गया। लेकिन अभी तक वहां पर शांति है। होम मिनिस्टर साहब बताएं कि इसके क्या रीएक्शन और रिपरकशनज हुए हैं। इन बातों से जाहिर होता है कि वे लोग हिन्दुओं और सिखों को लड़ाना चाहते हैं। उनकी पूरी कोशिश है कि वे दोनों आपस में लड़ें। लेकिन अभी तक वे बिल्कुल अमन-चैन और शांति से रह रहे हैं। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम ला एंड आर्डर को फर्म हैंड से कंट्रोल करें और अकालियों को नेगोशिएटिंग टेबल पर लाकर पोलिटिकल सेटलमेंट करें। अकाली भाइयों से मेरी अपील है कि वे आकर प्राइम मिनिस्टर से बात करें। अगर और पार्टियों को भी बीच में लाना है, तो उन्हें बुला कर इस मामले को निपटारा जाए। श्री जैनुल बशर ने कहा है कि सरकार कमजोर है। सरकार बिल्कुल कमजोर नहीं है।

सरकार अपना टाइम देखती है कि हमने किस टाइम पर क्या करना है। क्या वह पंजाब में आग लगा दे? सरकार को सोच समझ कर काम करना होता है। ऐसी बातें हमारी जुबान पर नहीं आनी चाहिए। न ही आग लगेगी और न ही सरकार कमजोर है।

MR. DEPUTY SPEAKER : Hon. Members, now we have got to take up Half-an-Hour discussion and the Government has told us that this Bill also which was stopped in the middle, must be passed today as it has got to go to Rajya Sabha. This discussion also should be concluded. Half-an-hour discussion we are going to start, then we take up the Bill. In five minutes the Bill will be passed and then we come to This discussion and complete it today. Going on postponing becomes every stale, therefore, we must conclude it today. Now Mr. Paswan. He must definitely take only half-an-hour. Half-an-Hour discussion should not go beyond half-an-hour.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : He is prepared to take the Bill first and then Half-an-hour.

SHRI RAM VILAS PASWAN (Hajipur) : If the Parliamentary Minister desires I have no objection.

MR. DEPUTY SPEAKER : We will take the Bill first, then Half-an-Hour discussion, then we will complete Punjab discussion today.

17.40 hrs.

STATUTORY RESOLUTION RE : DISAPPROVAL OF TEA (AMENDMENT) ORDINANCE AND TEA AMENDMENT BILL

MR. DEPUTY-SPEAKER : I will now put the statutory resolution moved by Shri Krishna Kumar Goyal to the vote. The question is :

“This House disapproves of the Tea (Amendment) Ordinance, 1983 (Ordinance No. 7 of 1983) promulgated by the President on the 7th October, 1983.”